Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 3 (2022)pp: 33-34
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

साहित्य समीक्षा:- आशारानी त्रिपाठी लिखित "मनुस्मृति: ए क्रिटिकल स्टडी एंड इट्स रिलेवन्स इन द मॉर्डन टाइम":(2015)

द्वारा :-मृदुला गौड़
शोधार्थी

***R**eceived 28 Feb, 2022; **R**evised 06 Mar, 2022; **A**ccepted 08 Mar, 2022 © The author(s) 2022.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

आज की इस साहित्य समीक्षा में मैंने श्रीमति आशा रानी त्रिपाठी जी की अंग्रेजी में मुद्रित पुस्तक को चुना है।

इस पुस्तक में लेखिका ने लगभग सम्पूर्ण मनुस्मृति को ही विस्तृत परन्तु अत्यधिक सरल भाषा में समझा दिया। उक्त पुस्तक लेखिका का संस्कृत भाषा में किया गया शोध कार्य है जिसे उन्होनें पुस्तक के रूप में प्रकाशित करवाया और जिसे मुझे पढ़ने का सौभाग्य मिला।

शुरूआत में मुझे लगा पता नहीं किस तरह का विषय है मगर सच में इतनी अच्छी व्याख्या, सटिक विवरण, सब कुछ इतने अच्छे प्रकार से किया गया है कि पढ़ने वाला आसानी से समझ सके। अंग्रेजी भाषा में होने के कारण यह आजकल की युवापीढ़ी जो अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों कि शौकिन है के लिए आसानी से उपलब्ध है । अन्यथ कई लोग चाह कर भी इसे नही पढ़ पाते ।

पुस्तक में लेखिका ने परिचय में मनुस्मृति व अन्य वैदिक ग्रन्थों तथा अन्य स्मृतियों का वर्णन भी किया है। साथ ही इसके रचनाकाल, विषय वस्तु भाषा आदि के बारें में बताया है। आशारानी की इस पुस्तक में परिचय समेत कुल 11 अध्याय है जिनमें स्पष्ट रूप से मनुस्मृति का सम्बन्ध धर्म, मानवीय मूल्यों, ब्राह्ाणवाद, राजधर्म, दण्ड, शुद्ध, स्त्रीयों की समाज में स्थिति, प्रायश्चित, आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक जैवविविधता संरक्षण व स्थायित्व जैसे विषयों का विस्तार से मनुस्मृति के श्लोेकों का उद्धरण देते हुए व्याख्या की गई। इस पुस्तक की विशेषता इसका प्रमाणों के साथ होना है ।जो सिद्ध करता है कि यह कोरी कल्पना नही है।

अंग्रेजी भाषा में होने तथा मूल रूप से संस्कृत से जुड़ा विषय होने पर भी मनुस्मृति की इतनी सुन्दर स्पष्ट व्याख्या शायद ही कही मिले। अपनी पुस्तक में लेखिका ने बहुत ही सुन्दर तरह से समझाया है कि किस तरह मनुस्मृति में इस बात का प्रमाण है कि धर्म व मानवीय मूल्यों केद्वारा आधुनिक समाज में जीवन की गुणवत्ता को सुधारा जा सकता है । यहां तक कि धर्म व नैतिक मूल्यों से सम्पूर्ण विश्वमें सौहार्दय को बनाये रखा जा सकता है।

लेखिका आशारानी त्रिपाठी जी ने प्रमाण सहित मनुस्मृति मे राजधर्म ,राजा के उदय ,आचरण ,योग्यता , राजनीति ,राज्य की सुरक्षा ,व्यवस्था, मंत्रीमंडल का चुनाव, दंड व्यवस्था प्रमुख रूप से मत्सय न्याय , समाज में दंड की आवश्यकता आदि सभी तथ्यों को मनुस्मृति के माध्यम से समझाया है।

इस पुस्तक में जो विषयवस्तु अन्य पुस्तकों से इसे अलग करती है वह इससे लिया गया। अर्थशास्त्र व जैवविविधता संरक्षण का मुद्दा।

इस पर पूर्व में शायद ही किसी का ध्यान गया होगा। अब तक शायद ही किसी ने मनुस्मृति का सम्बन्ध इतने अच्छे प्रकार से आर्थिक वृद्धि के घटको से, कृषि, मजदूर, पूंजी, पूंजी के स्रोत, व्यापार, व्यापार नीति, राजकोष, कर आदि के साथ नहीं किया गया होग

निश्चित ही लेखिका ने गूढ़ अध्ययन के उपरान्त ही पुस्तक लेखन को सम्पन्न किया होगा अन्यथा इस स्तर का लेखन आज के समय में शायद ही देखने को मिले।

अब तक कई पुस्तकों में मनुस्मृति और समाज /ब्राह्ाण /शुद्र /स्त्री आदि पर आधारित पाठ्यवस्तु मिल जाती थी परन्तु प्रथम दृष्ट तथा मेरे जानकारी में यह प्रथम पुस्तक है जिसमें मनुस्मृति के श्लोको के माध्यम से नगर व्यवस्था, जैव तन्त्र, जैव विविधता, वृक्ष के संरक्षण, मृदा संरक्षण, जल संरक्षण, पशु संरक्षण (प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण) पर किसी ने ध्यान केन्द्रित करवाया हो। सारांश में यह पुस्तक मनुस्मृति का निचोड़ है जिसे हर व्यक्ति को एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए।